मंगलवार, 28 फरवरी, 2023

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2023 का आकर्षण

मातृभाषा में अध्ययन की महत्वाकांक्षी योजना के तहत हॉल सं. 4 (प्रथम तल) पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति का विशेष मंडप स्थापित किया गया है। जैसा कि सभी जानते हैं कि 29 जुलाई, 2020 को भारत सरकार के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 को अनुमोदन प्रदान किया गया था। इस नई नीति को 34 वर्ष पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई), 1986 के स्थान पर लाया गया है और जिसका उद्देश्य विद्यालय-पूर्व से माध्यमिक स्तर की शिक्षा का सार्वभौमिकरण करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का दीर्घकालिक महत्व है। इसका प्रभाव पठन-संस्कृति, पुस्तक प्रकाशन, लेखन, पुस्तक प्रोन्नयन, सामग्री निर्माण आदि पर भी पड़ेगा। तभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के विभिन्न पहलुओं को व्यापक रूप से समाज में विमर्श का विषय बनाने के लिए नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला-2023 में इसे विशेष स्थान दिया गया है। इस विशेष मंडप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

मुख्य बिंदु

1. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य बाल विकास और बाल क्षमता व योग्यताओं को ध्यान में रखते हुए दशकों पुराने 10+2 के प्रारूप को 5+3+3+4 प्रणाली में बदलना है। 3 से 18 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य होगी।

2. बच्चों की प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा प्राथमिक विद्यालय की तैयारी से ज्यादा जरूरी है। इसका उद्देश्य जीवनभर सीखने तथा लोक कल्याण के लिए ठोस व व्यापक आधार निर्मित करने हेतु बच्चों की सामाजिक, भावात्मक, ज्ञानात्मक और शारीरिक आवश्यकताओं का समग्र विकास करना है। आँगनवाड़ी तथा पूर्व विद्यालयों में शिक्षक होंगे और आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीसीई) पाठ्यक्रम के अनुरूप प्रशिक्षित किया गया है।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति बच्चों को मातृभाषा में अध्ययन करने पर जोर देती है। हालाँकि यह नई नीति केवल मातृभाषा में अध्ययन की सिफारिश करती है, इस व्यवस्था को अनिवार्य नहीं बनाया गया है। यह नीति बताती है कि बच्चे अपनी मातृभाषा में कठिन-से-कठिन विषयों को कम समय में सीखते हैं।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत कला और विज्ञान, पाठ्यक्रम संबंधी और पाठ्येतर गतिविधियों, व्यावसायिक और शैक्षिक शाखाओं के मध्य किसी प्रकार का सख्त विभाजन नहीं होगा। विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार विषयों का चयन कर सकते हैं।

5. एनईपी-2020 बताती है कि विद्यालयों में छठी कक्षा से व्यावसायिक शिक्षा का आरंभ होगा तथा इसमें प्रशिक्षण भी शामिल होगा।

6. शिक्षा मंत्रालय द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन का आरंभ किया जाएगा। वर्ष 2025 तक राज्य एक ऐसी योजना का क्रियान्वयन करेंगे, जिसके अंतर्गत सभी प्राथमिक विद्यालयों में तीसरी कक्षा के स्तर के बच्चों को सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त हो सके।

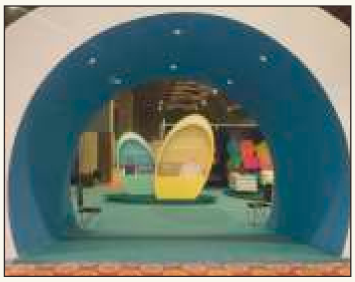

7. इस नीति के अनुसार, अनिवार्य शिक्षा और गहन सोच तथा प्रायोगिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पाठ्यक्रम को पहले से कम किया जाएगा।

8. सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों, जिनमें लिंग संबंधी, सामाजिक-सांस्कृतिक और भौगोलिक पहचान तथा विकलांगता शामिल है, पर जोर दिया जाएगा। इसके अंतर्गत लिंग समावेशी निधि का गठन करना और वंचित क्षेत्रों के लिए विशेष शिक्षा मंडल बनाना भी शामिल है।

9. यह नीति बताती है कि दिव्यांग बच्चे शिक्षकों के समर्थन से, क्रॉस दिव्यांगता प्रशिक्षण तथा प्रौद्योगिकी आधारित अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उपकरणों की मदद से प्रारंभिक स्तर से उच्च स्तर तक की शिक्षा को नियमित रूप से विद्यालय जाकर प्राप्त कर सकेंगे।

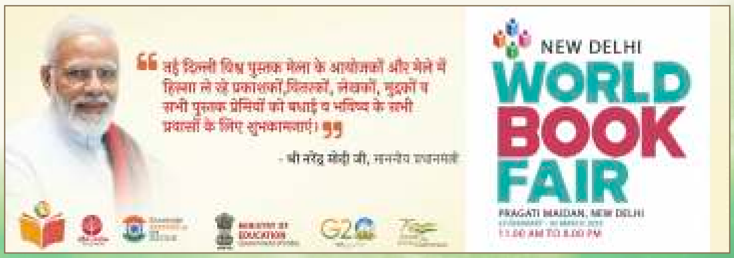

वीरचंद्र गढ़वाली के बगैर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अधूरा : डॉ. निशंक

“महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि यदि उनके पास गढ़वाली जी जैसे पाँच लोग होते तो देश बहुत पहले आजाद हो गया होता। श्री वीरचंद्र गढ़वाली के योगदान के विमर्श के बगैर भारत की आजादी की लड़ाई के इतिहास की कल्पना नहीं की जा सकती।” पूर्व शिक्षा मंत्री और हरिद्वार से सांसद, 100 से अधिक पुस्तकों के लेखक डॉ. रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ की हाल ही में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा ‘आजादी के अमृत उत्सव’ के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तक ‘वीरचंद्र सिंह गढ़वाली’ के लोकार्पण के अवसर पर लेखक के यह उद्गार थे।

डॉ. निशंक की दूसरी पुस्तक ‘हिमनद : मानव जीवन का आधार’ के संबंध में उन्होंने कहा कि हिमालय केवल पहाड़ नहीं है, यह एक जीवन दर्शन, अध्यात्म का केंद्र और पर्यावरण व जल संरक्षण का संदेश है।

इस आयोजन की अध्यक्षता श्री बी.एल. गौड़ ने की।

इस अवसर पर श्रीनिवास त्यागी ने कहा कि इस पुस्तक की भाषा बहुत सहज, सरल और संप्रेषणीय है। प्रो. रमा, प्राचार्य, हंसराज कॉलेज ने दोनों पुस्तकों की विस्तार से समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि श्री गढ़वाली केवल स्वतंत्रता संग्राम सैनानी मात्र नहीं थे, वे समाजसेवी और योजनाकार भी थे। डॉ. नीलम सक्सेना ने कहा कि श्री गढ़वाली पर पुस्तक लिखना एक साहसपूर्ण कार्य है। श्री सत्यकेतु सांकृत्यायन ने कहा कि महात्मा गांधी से पहले श्री गढ़वाली ने असहयोग और अहिंसा का सहारा लिया था। प्रो. उमापति दीक्षित ने ‘हिमनद’ पुस्तक पर समीक्षा प्रस्तुत की। इग्नू की प्रति कुलपति डॉ. सुमित्रा कुकरेती ने कहा कि ‘मेरे लिए यह कहना मुश्किल है कि निशंक जी बेहतर राजनेता हैं या लेखक’। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री बी.एल. गौड़ ने निशंक जी के शिक्षा मंत्री काल में तैयार शिक्षा नीति और उनकी सौ से अधिक पुस्तकों पर बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. योगेन्द्र शर्मा अरुण ने किया।

राइट्स टेबल पर रिश्ते विकसित करने में समय लगता है : एंगस फिलिप्स

“दुनिया के सभी पुस्तक मेलों में पुस्तकों के प्रतिलिप्यधिकार (राइट्स) प्राप्त करने के लिए राइट्स टेबल एक लोकप्रिय माध्यम है, लेकिन व्यवसाय के लिए टेबल पर आमने-सामने बैठे प्रकाशक-संपादक को एक-दूसरे की जरूरत समझने और निजी रिश्ते बनाने में समय लगता है। एक बार विश्वास स्थापित होने के बाद वे अपने संस्थान और पाठक की आवश्यकताओं को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। प्रकाशकों को अंतरराष्ट्रीय प्रतिलिप्यधिकार के लिए अपने देश की एक से अधिक भाषाओं पर काम करना चाहिए।” प्रकाशन व्यवसाय में दुनियाभर में लोकप्रिय ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल सेंटर फॉर पब्लिशिंग के अध्यक्ष एंगस फिलिप्स ने यह उद्गार दो दिवसीय नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच (नई दिल्ली राइट्स टेबल) कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि की आसंदी से व्यक्त किए।

विदित हो कि इस आयोजन में 12 देशों के 80 से अधिक प्रकाशक सहभागी हैं और अनुमान है कि यहाँ 400 से अधिक बी-टू-बी मीटिंग होंगी। ये देश हैं—नेपाल, फ्रांस, तुर्किये, श्रीलंका, दक्षिण कोरिया, हाँगकाँग, हंगरी, ईरान, अल्जीरिया, अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात।

कार्यक्रम का प्रारंभ न्यास के निदेशक श्री युवराज मलिक ने एक महत्वपूर्ण घोषणा से किया कि न्यास जल्द ही अनुवाद के लिए वित्तीय सहायता (ट्रांस्लेशन ग्रांट) की योजना शुरू करने जा रहा है, जिससे भारतीय पुस्तकों के वैश्विक प्रतिलिप्यधिकार आदान-प्रदान को नई ऊँचाइयाँ मिलेंगी। श्री मलिक ने कहा कि जिस तरह दुनिया और उसकी अर्थव्यवस्था बदल रही है, ऐसे में हमें अपनी सीमाओं से परे जाकर देखना होगा। इसमें अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने मुद्रित और ई-बुक्स दोनों तरह के प्रतिलिप्यधिकार के महत्व पर प्रकाश डाला।

समारोह में विशिष्ट अतिथि—केपेक्सिल और एफआईपी के प्रमुख श्री राकेश मित्तल ने कहा कि प्रकाशन व्यवसाय के विस्तार के लिए हमें सहयोग, सहकार और सामंजस्य की नीति को अपनाना होगा। उन्होंने केवल विदेशी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं में भी प्रतिलिप्यधिकार आदान-प्रदान की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम का संचालन अंग्रेजी संपादक कुमार विक्रम ने किया।

नेपाल-भारत की साझा संस्कृति की साक्षी पुस्तकें

भारत के पड़ोसी देश, नेपाल से इस बार दो संस्थाएँ अपने देश के साहित्य, लोक, संस्कृति का खजाना लेकर आई हैं। नेपाल इंटरनेशनल बुक फेयर के स्टॉल पर कुल चार प्रकाशकों की सौ से अधिक पुस्तकें हैं। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में पहली बार भागीदार बनी संस्था के संचालक श्री वसीम ने बताया कि उनका प्रकाशन नेपाल पर केंद्रित पुस्तकों के प्रकाशन के लिए पहचाना जाता है। भारत-नेपाल संबंध, नेपाल की संस्कृति, सामरिक महत्व आदि पर पुस्तकों के साथ-साथ यहाँ नेपाली कॉमिक्स भी हैं।

पिछले कई सालों से मेला में भागीदार व्हाइट लोटस, काठमांडू के संचालक युयुत्स शर्मा ने बताया कि इस पुस्तक मेले के लिए उन्होंने कुछ पुस्तकों को खासकर प्रकाशित किया है। इनमें लॉस्ट होरस्कोप, प्रतीक पत्रिका का अंक, हिस्ट्री ऑफ नेपाल (श्री रामप्रसाद उपाध्याय), इंटरनेशनल बाउंड्रीज ऑफ नेपाल (बुद्धनारायण श्रेष्ठ) आदि प्रमुख हैं।

बाल मंडप

बच्चों के कंधों को बस्ते से मुक्त किया जाए : डॉ. क्षमा शर्मा

प्रख्यात बाल साहित्यकार और नंदन पत्रिका की पूर्व संपादक डॉ. क्षमा शर्मा ने अपने कथा वाचन सत्र में 'बस्ते' कहानी का वाचन हिमालय पब्लिक स्कूल रोहिणी, दिल्ली

वर्ल्ड पब्लिक स्कूल नोएडा एवं आदर्श शिक्षा निकेतन, मयूर विहार के बच्चों के सामने किया। कहानी में बस्ते और किताबों के आपसी संवाद के माध्यम से बताया गया है कि बच्चों के कंधों पर किताबों का वजन ज्यादा बढ़ गया है और अब उसको कम करना चाहिए। वैसे भी डिजिटल वर्ल्ड में अब ज्यादातर पुस्तकें आ चुकी हैं, तो स्कूलों को भी बच्चों के कंधों को मुक्त करके उनके मन-मस्तिष्क को सँवारना चाहिए जिससे वो पढ़ाई को बोझ न समझें और खुशी-खुशी बगैर किसी दबाव के शिक्षा प्राप्त कर सकें।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

अंतर्विद्यालयी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रथम एनजीओ, आदर्श शिक्षा निकेतन स्कूल ने हिस्सा लिया। उत्तर देने वाले बच्चों को पुस्तक वितरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन आकांक्षा बिश्नोई और आसमा खानम ने किया।

शब्दों से नहीं, चित्र से समझिए कहानियाँ : कांतो जिमो

लंबे समय से हम कहानियों को सुनते आ रहे थे, फिर लिखने की कला विकसित हुई। वर्तमान समय में चित्रों से भी कहानियों की संवेदना को समझा जा सकता है। अभी बाल जीवन पर जो भी पुस्तकें आ रही हैं, उनमें शब्दों के साथ-साथ चित्रों का भी प्रयोग देखा जा रहा है। एक कार्यशाला में चित्रकार कांतो जिमो ने बच्चों के सामने चित्र दिखाकर उनसे उसका मतलब पूछा जिससे कहानी स्वयं ही धारा में चलने लगी और वहाँ पर मौजूद बच्चों को भी समझ में आई।

वर्तनी प्रतियोगिता

अंग्रेजी शब्दों की सही स्पेलिंग अर्थात् वर्तनी की अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिता में बच्चों की भागीदारी न केवल रोचक थी, बल्कि ज्ञानवर्धक भी रही। प्रतियोगिता में अरहान जैन, प्रथम; प्रणव, द्वितीय और स्मृति सुमन, तृतीय स्थान पर आए। इस कार्यक्रम का संचालन असमा खानम ने किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सातवीं डोगरा रेजीमेंट के कलाकारों के स्वर और संगीत से प्रगति मैदान झंकृत हो गया। आर्मी बैंड के कलाकर अभिनंदन सिंह और राहुल ने हिंदी के मशहूर गीतों जैसे—गुलाबी आँखे जो तेरी देखीं, दूरी ना रहे कोई आज इतने करीब आ जाओ आदि का गायन किया। इनका साथ दे रहे थे—पियानो पर विक्रम, पैड पर आशीष, बेस गिटार पर सोमसुंदर और गिटार पर अंकित। कार्यक्रम का संचालन अशोक कुमार ने किया।

भारत की जी-20 अध्यक्षता को मजबूत करने में शिक्षा की भूमिका

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के सहयोग से एसोसिएटेड चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एसोचैम) द्वारा भारत की जी-20 अध्यक्षता को मजबूत बनाने में शिक्षा की भूमिका पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था, जिसमें वक्ता थे—प्रोफेसर अमर पी. गर्ग (कुलपति, शोभित विश्वविद्यालय), डॉ. संजीव चतुर्वेदी (निदेशक, जीएनआईओटी

इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज) और डॉ. सपना राकेश (निदेशक, जीएल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च)।

आज के प्रौद्योगिकी-प्रधान दौर को ध्यान में रखते हुए, चर्चा से यह बात उभरकर आई कि शिक्षा का मूल नई शिक्षा प्रणाली पर केंद्रित होना चाहिए जिसमें रचनात्मकता और नवीन कौशल पर समान ध्यान दिया गया है। व्यावसायिक शिक्षा को बड़े पैमाने पर लागू किया जाना चाहिए क्योंकि यह युवाओं के लिए अधिक अवसर खोलता है। भारत को इस संबंध में जी-20 देशों से बहुत कुछ सीखना है। संचार, सार्वजनिक भाषण, ऑटोमोबाइल, मोबाइल मरम्मत, सैलून आदि क्षेत्रों में व्यावसायिक लघु पाठ्यक्रम सभी को एक सतत् शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षण संस्थानों के साथ स्थानीय उद्योगों के सहयोग से चलाए जा सकते हैं। इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि जी-20 का मुख्य ध्यान अच्छे अनुसंधान, आशा, सद्भाव, शांति और स्थिरता के क्षेत्र में है। कई नए विचार सामने लाए गए और दर्शकों ने भी इसमें समान भागीदारी निभाई।

थीम मंडप

गांधीवादी क्रांतिकारी 'हार्डेकर मंजप्पा' की जीवनी पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भारत @75 शृंखला के अंतर्गत प्रकाशित कन्नड़ पुस्तक 'अग्नाटा सांटा हार्डेकर मंजप्पा' का विमोचन किया गया। पुस्तक के लेखक अरविंद चोक्काड़ी ने पुस्तक के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी

और लेखन के दौरान शोध में आने वाली चुनौतियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक कर्नाटक के गांधीवादी क्रांतिकारी हार्डेकर मंजप्पा की जीवनी है। वे एक शिक्षक, लेखक और ऐसे क्रांतिकारी थे जिन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता सेनानियों की मदद की। टी.एस. सत्यानाथ ने कहा कि मंजप्पा गांधीवादी थे। उन्होंने समाज सुधार के लिए कार्य किए। मंजप्पा ने 84 पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से अधिकतम बाल पुस्तकें हैं। पुस्तक का मुख पृष्ठ लिंगा संस्कृति को दर्शाता है। संचालन पुरुषोत्तम बिलमले ने किया। उद्घाटन सत्र में न्यास की मुख्य संपादक और संयुक्त निदेशक श्रीमती नीरा जैन उपस्थित रहीं।

पानीपत का युद्ध हमें कुदरत ने हराया : विश्वास पाटिल

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से आयोजित प्राइम टाइम चर्चा में 'पानीपत' उपन्यास के लेखक विश्वास पाटिल युवा लेखकों से रू-ब-रू हुए। इस दौरान उन्होंने पानीपत उपन्यास के कथानक को साझा किया और बताया कि पानीपत का युद्ध हिंदू और मुसलमानों के बीच नहीं, बल्कि भारतीयों और विदेशियों के बीच था। वास्तव में पानीपत का युद्ध हमें कुदरत ने हराया था। इस दौरान उन्होंने युवा लेखकों के प्रश्नों का उत्तर दिया।

हम लेखन के द्वारा अपनी संस्कृति को आगे ले जा सकते हैं : अखिलेश मिश्रा

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से आयोजित युवा सत्र में सम्मानित अतिथि अखिलेश मिश्रा ने कहा कि 15-16वीं शताब्दी में यूरोप में नए शासन का उद्भव हुआ। इसके बाद से यूरोप तेजी से आगे बढ़ा। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम लेखन के जरिए भारत के ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक स्वरूप को दुनिया के सामने रखें ताकि दुनिया हमसे प्रेरणा ले, न कि हम दुनिया से प्रेरणा लें। अच्छे उपन्यास और कथेतर साहित्य के माध्यम से हमें भारत की सफलता की कहानी लिखकर बतानी होगी। इस दौरान उन्होंने युवा लेखकों के प्रश्नों का उत्तर दिया।

राष्ट्रीय चेतना को समझने के लिए जब्तशुदा साहित्य को पढ़ना चाहिए

साहित्य अकादेमी द्वारा 'साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' विषय पर आयोजित गोष्ठी में प्रो. कन्हैया त्रिपाठी ने कहा कि 'राष्ट्रीय चेतना' की भावना भारतवासियों के नाभिनाल में है। चाहे वो कोई भी समय रहा हो। भारत में अनेक विपत्तियाँ आई हों, लेकिन हमारे देश के वीर सपूतों ने अपनी लड़ाई को लड़ा है। जिसमें कुछ लोगों ने अपने शरीर से योगदान दिया तो कुछ क्रांतिकारी लेखकों ने अपनी कलम से देश की एकता, अखंडता और विदेशी राज्य का विरोध दर्ज कराया। राष्ट्रीय चेतना की भावना दरअसल प्रतिरोध से ही पैदा होती है। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. चंदन कुमार चौबे ने कहा कि प्रतिरोध नहीं, बल्कि हिंदू स्वत्व ही राष्ट्रीय चेतना का मूल आधार है। कन्हैया त्रिपाठी ने कई हिंदी-उर्दू के लेखकों के जब्तशुदा साहित्य को रेखांकित करते हुए अपनी बात को पुख्ता करने का प्रयास किया, जबकि प्रो. चौबे ने भूषण, सेनापति, सदानंद जैसे 17वीं से 19वीं सदी के लेखकों का वर्णन किया है। यह संवाद ऐसे ही आगे बढ़ता रहा। डॉ. राहुल के विचार में हिमालय देव तुल्य है। राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत गीत को रेखांकित करते हुए उन्होंने बंकिम चंद्र चटर्जी, रवींद्रनाथ टैगोर, माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के गीतों को सुनाया। इस कार्यक्रम का संयोजन साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने किया।

हमें गलत इतिहास पढ़ाया गया–विक्रम संपत : प्रख्यात लेखक और इतिहासकार विक्रम संपत का कहना है कि देश के पुराने इतिहासकार झूठे हैं। हमारे देश की शौर्य गाथाएँ विश्व में स्थान रखती हैं तो फिर क्या कारण है कि देश के इतिहासकारों ने उनको स्थान नहीं दिया। श्री संपत का दावा था कि सावरकर के संबंध में जो विचार रोज प्राइम टाइम न्यूज और सोशल मीडिया पर घूमते रहते हैं, वे ज्यादातर तथ्य विहीन होते हैं। बार-बार यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने छह माफीनामे लिखे, लेकिन उस समय की परिस्थितियों के संदर्भ में कोई बात नहीं करता है। आखिर ऐसा क्यों हुआ? राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित प्राइम टाइम विमर्श में श्री विक्रम संपत ने कहा कि काला पानी की सजा में सावरकर को लिखने के लिए अंग्रेजों ने कोई पेन-कॉपी नहीं दी, इसलिए उन्होंने अपनी देशभक्ति से ओत-प्रोत कविताएँ मराठी भाषा में ही सेल की दीवारों पर लिखीं। किसी भी इतिहासकार ने इसका कोई वर्णन नहीं किया, आखिर कारण क्या है? हमें ऐसे तथ्यों से क्यों दूर रखा गया। उनकी कविताएँ देशभक्ति, हिंदू संस्कृति, संस्कार से परिपूर्ण थीं।

भगत सिंह की मूल डायरी देखकर अभिभूत हूँ–*तमिलिसाई सौंदरराजन*

तेलंगाना की राज्यपाल ने विश्व पुस्तक मेले का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने थीम पवेलियन, इंटरनेशनल पवेलियन का अवलोकन किया। उन्होंने संविधान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने वाली प्रदर्शनी को देखकर न केवल खुशी जताई, अपितु वहाँ संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर की प्रतिमा के साथ फोटो भी खिंचवाए। साथ ही, वे राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के स्टॉल पर भी गईं और पुस्तकों के बारे में न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक से जानकारी ली। इस दौरान वे एक अन्य प्रकाशक किताबवाले के स्टॉल पर भी गईं, जहाँ पहले से मौजूद पूर्व शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक के साथ के.डी. शर्मा की पुस्तक 'सिंहावलोकन : गदर से गणतंत्र' के विमोचन कार्यक्रम में लेखक को बधाई दी। फ्रांस के स्टॉल पर उन्होंने वहाँ उपस्थित पाठकों से बात की और बच्चों से मेले के बारे में पूछा। तत्पश्चात उन्होंने थीम पवेलियन में रखी भगत सिंह की मूल डायरी को भी देखा और उसे पहली बार देखने पर प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास को इस आयोजन के लिए बधाई देते हुए सराहना की।

साहित्यिक गतिविधियाँ

राजपाल एंड संस द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'स्वयं प्रकाश स्मृति सम्मान' 'एक देश बारह दुनिया' के रिपोर्ताज लेखक शिरीष खरे एवं 'बदलता हुआ देश' के कहानीकार मनोज कुमार पांडेय को दिया गया। यह सम्मान 'स्वयं प्रकाश स्मृति न्यास' की तरफ से मुख्य अतिथि एवं वरिष्ठ लेखक विष्णुनागर ने दिया। उन्हें भेंट स्वरूप प्रशस्ति पत्र, 11000 रुपये सम्मान राशि और शॉल दिया गया। संचालन पल्लव कुमार ने किया।

प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन द्वारा आदिवासी पुस्तक लोकार्पण एवं चर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें यशोदा मुर्मू (संताली), जान मोहम्मद हकीम (गोजरी), डॉ. स्नेहलता नेगी (खस), डॉ. सरदार सिंह मीणा (ढूंढाणी), वांगतुंग लोवांग (नोक्ते) ने अपनी-अपनी मातृभाषा एवं आदिवासी समुदायों की लेखन विकास यात्रा का संक्षिप्त परिचय देते हुए भाषा और लिपि को लेकर आदिवासी लेखकों के संघर्ष पर बात की। यशोदा मुर्मू ने अनुवाद के जरिए आदिवासी साहित्य को समृद्ध करने की बात कही ताकि गैर-आदिवासी पाठक वर्ग भी हमारे साहित्य के बारे में जान सके। डॉ. स्नेहलता नेगी ने कहा कि आदिवासी विमर्श जरूरी है ताकि सभी समुदायों के मध्य संवाद स्थापित हो सके। संचालन खड़िया भाषा की लेखिका वंदना टेटे ने किया।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं में बढ़ती तकनीकी शब्दावली पर चर्चा हुई, जिसमें सीएसटीटी (वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग) के अध्यक्ष प्रो. गिरीश नाथ झा, डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डॉ. अशोक एन. सेलवातकर, डॉ. बी.के. सिंह, श्री दीपक कुमार, श्री एम.के. भराल उपस्थित थे। प्रो. गिरीश कुमार ने तकनीकी शब्दावली के विकास का महत्व बताते हुए कहा कि भारतीय संविधान में उल्लिखित 22 भाषाएँ, चार भाषा परिवार की हैं और केवल इन्हीं भाषाओं में बच्चों को शिक्षित करना कठिन है, क्योंकि तकनीकी शब्दों का अनुवाद करना और समझना बच्चों के लिए कठिन है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम हर भाषा के लिए तकनीकी शब्दावली का निर्माण करें।

सांकेतिक भाषा से शिक्षा की नई राह : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान द्वारा बधिर और कम श्रवण क्षमता रखने वाले विद्यार्थियों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 12 वर्ष तक के बच्चों ने भाग लिया। प्रतिभागी बच्चों को 'भारत के अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों', 'भारत 2047 में', 'भारत के सौ वर्ष', 'भारत त्योहारों का देश' और 'भारत के व्यक्तित्व' जैसे विषयों पर सांकेतिक भाषा में निबंध प्रस्तुत करना था। सौदामिनी संत पेठी (अधिवक्ता) और सिद्धार्थ ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

रेनोवा इंटरनेशनल पब्लिकेशंस द्वारा दिव्यांग बच्चों के लिए प्रकाशित की गई पुस्तकों का लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर ओम साईं स्पेशल स्कूल, साहिबाबाद के दिव्यांग बच्चों ने नृत्य की मुद्रा में शिव स्तुति प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे– टी.डी. धारियाल, पूर्व उप मुख्य आयुक्त एवं सलाहकार सी.वी.एम. इंडिया ट्रस्ट। उन्होंने कहा कि जो बच्चे शारीरिक रूप से अक्षम हैं, उनकी शिक्षा की सुदृढ़ व्यवस्था होनी चाहिए। हमें यह नहीं कहना चाहिए कि हमारे पास योग्य शिक्षक नहीं है या उनके लिए पाठ्य सामग्री का अभाव है। इसकी व्यवस्था करने की हमारी जिम्मेदारी है। जो शिक्षा की स्तरीय प्रणाली सामान्य बच्चों के लिए है, उसी स्तर की शिक्षा दिव्यांग बच्चों को भी दी जाए। इसके लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। हमारे देश में ज्यादातर दिव्यांग बच्चे स्कूल नहीं जाते, उनकी शिक्षा की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं होती, इसमें हम सबका भी सहयोग होना चाहिए। कार्यक्रम में अध्यापकों, बच्चों तथा लेखक वर्ग को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. सुबोध कुमार, डॉ. जयंती पुजारी, डॉ. निखिल जैन, डॉ. राजीव नंदी, डॉ. हेमलता, डॉ. इस्लाम, डॉ. सुदीप कुमार दुबे, के.वी.एस. राव उपस्थित रहे।

जनजातीय जांबाजों पर चर्चा

युवा लेखक सत्र में उपस्थित लेखकों ने जनजातीय जांबाजों पर चर्चा की। बुधिदिप्ता ढिंगिया ने अपनी पुस्तक 'गमाधार' (स्वाधीनता अनोदोलानार बात कोट्टिया गोमधार कोन्वरार आत्मोकथा) के बारे में बताते हुए कहा कि असम ने कई पीढ़ियों तक जांबाजों को जन्म दिया है और आजाद भारत की तस्वीर उत्तर-पूर्व के वीरों के बलिदान के बिना अधूरी है, उन्हीं में से एक वीर की चर्चा मेरी पुस्तक में है। अक्षत देव ने अपनी पुस्तक 'सॉन्ग ऑफ रिबेल' के बारे में बताते हुए व्यंग्यात्मक रूप से कहा कि आज सब मंगल पांडे, बिरसा मुंडा के बारे में जानते हैं, पर कितने ही लोग सिद्धू और कान्हू जैसे गुमनाम वीरों का नाम नहीं जानते। फिल्म 'आरआरआर' के बाद अल्लूरी सीताराम राजू और कोमाराम भीम के बारे में जानने लगे हैं, मैं चाहता हूँ मेरी किताब पढ़ने के बाद भी कुछ ऐसा ही असर हो।

अरब-भारत प्रकाशकों के बीच सहयोग की संभावनाएँ

भारत और अरब के प्रकाशकों के बीच आपसी सहयोग और विपणन की संभावनाओं को लेकर आयोजित विमर्श में सऊदी अरब के एच.ई श्री सलेह बिन ईद अल-हुसैनी (भारत में सऊदी अरब के राजदूत), डॉ. खालिद यूसुफ बारगावी, मो. अजमल और श्री रमेश के. मित्तल (एफआईपी अध्यक्ष) के बीच विमर्श हुआ। श्री रमेश के. मित्तल ने भारत को दुनिया में प्रकाशन में तृतीय और अंग्रेजी-प्रकाशन दूसरे स्थान पर बताते हुए भारत में प्रकाशन व्यवसाय की सशक्त संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उनका कहना था कि दोनों देशों के प्रकाशकों के लिए अनुवाद एक महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है। इससे एक दूसरे के साहित्य को समझने का अवसर भी मिलेगा। उन्होंने दोनों देशों के प्रकाशकों के लिए प्रशिक्षण का सुझाव दिया। डॉ. अजमल ने रमेश मित्तल की बात का समर्थन करते हुए दोनों देशों के प्रकाशकों के बीच करार को नए लेखकों के लिए एक अच्छा अवसर बताया। उन्होंने प्रकाशन कार्य में आई कुछ चुनौतियों जैसे कि ई-बुक, लेखन की चोरी और प्रकाशकों की कमाई का घटता स्तर आदि का उल्लेख किया।

‘आजादी के अमृत उत्सव’ को सकारात्मक दिशा देती ‘भारत @75 परियोजना’

वर्ष 2022 में भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा एक नई पुस्तक शृंखला भारत @75 उन व्यक्तियों के योगदान तथा नए एवं आधुनिक शहरों के निर्माण, ऐतिहासिक घटनाओं और अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक विचारों और विषयों के बारे में दस्तावेज बनाने के लिए संकल्पित की गई है, जिन्होंने भारत के विकास में योगदान दिया है। ऐसे व्यक्तित्वों ने 1947 के बाद भारतवर्ष का एक स्वतंत्र, मजबूत और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में निर्माण किया है। यह राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया अपने प्राचीन संस्कृति और ज्ञान को भी आगे लेकर चली है। ऐसे में इस शृंखला के अंतर्गत भारतीय ज्ञान व्यवस्था को लेकर पुस्तकें प्रकाशित करने पर विशेष बल दिया जा रहा है और इस पर भी कि कैसे उन्होंने हमारी शैक्षणिक दृष्टि और नीतियों पर प्रभाव डाला है। शृंखला में शामिल पुस्तकों के निम्नलिखित मुख्य भाग हैं—

भाग ‘अ’ (युवा पाठकों के लिए)

1. चार वैचारिक स्तंभों के तहत पुस्तकों की एक शृंखला : व्यक्तित्व, स्थान, घटनाएँ और विषय-वस्तु।
2. वैचारिक स्तंभों के तहत 75 पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। इसमें 1947 के बाद एक स्वतंत्र, आधुनिक और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में भारत की उपलब्धियों व विकास को दर्शाने पर विशेष बल दिया जा रहा है।
3. भाग अ की पुस्तकें 14 वर्ष से अधिक युवा वर्ग के लिए हैं।
4. श्वेत/श्याम रेखाचित्र के साथ 10-12 हजार शब्दों की पुस्तक।

भाग ‘ब’ (सामान्य वयस्क पाठक के लिए)

भारत @75 परियोजना के तहत शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार इस शृंखला में स्वतंत्रता सेनानियों पर 75 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

भाग ‘स’ (सामान्य पाठक व शिक्षाविदों के लिए)

निबंधों के संग्रह के विशेषांक का प्रकाशन—

1. संसद के 75 सबसे अच्छे भाषण।
2. विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय उपलब्धियों पर लेखों का संग्रह।
3. मील का पत्थर साबित हुए 75 न्यायिक निर्णय।

भाग ‘द’ (सामान्य वयस्क पाठक के लिए)

भारत @75ए विभिन्न देशों पर केंद्रित पुस्तकों का प्रकाशन, उदाहरण—

- भारत और जर्मनी
- भारत और फ्रांस
- भारत और मेक्सिको
- भारत और स्पेन

उल्लिखित देशों के दूतावासों के सहयोग से इन खंडों को प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है।

यह स्वतंत्रता पश्चात भारत के विभिन्न आयामों (विज्ञान, प्रकाशन, संस्कृति, रणनीति और सुरक्षा, खेल, पर्यावरण आदि) पर दिलचस्प सामग्री का एक संग्रह शामिल है।

विशेष आकर्षण

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
सभी पुस्तक प्रेमियों को आमंत्रित करता है

भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा एक नई पुस्तक शृंखला भारत @75

हिंदी, अंग्रेजी तथा 55 प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, कविता, जीवनी, लोकोपयोगी विज्ञान, राजनीति, शासन, संस्कृति, भारतीय समाज, भारतीय राज्य, बाल पुस्तकों व नवसाक्षरों हेतु पुस्तकें।

एनबीटी स्टॉल
हॉल सं.: 2, स्टॉल सं.: 48–67; हॉल सं.: 3, स्टॉल सं.: 13–42;
हॉल सं.: 4 (प्रथम तल), स्टॉल सं.: 04–05;
हॉल सं.: 5, स्टॉल सं.: 34–63

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
प्रगति मैदान, नई दिल्ली

25 फरवरी
05 मार्च
2023
प्रातः 11:00 बजे से
रात्रि 8:00 बजे तक

nbt.india
आयोजक
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

देश का नॉलेज पार्टनर
युवा 2.0
G20
सह–आयोजक
ITPO

मंगलवार, दिनांक 28 फरवरी, 2023 को आयोजित होने वाले कार्यक्रम

समय	कार्यक्रम	आयोजक
	एनईपी पवेलियन : हॉल सं. 4 (प्रथम तल)	
11.30-01.00	आईस्टार्ट कार्यक्रम	रा.पु. न्यास, भारत
03.00-04.00	नई शिक्षा नीति : 21वीं सदी में सफलता का भारतीय रोडमैप	
04.30-05.30	पैनल चर्चा	आईआईएम, काशीपुर
	इंटरनेशनल इवेंट/युवा कॉर्नर : हॉल सं. 4	
11.00	नई दिल्ली राइट्स टेबल	रा.पु. न्यास, भारत
02.00-03.00	रूस : इंटरनेशनल पवेलियन; अनुवाद संस्थान के अनुदान कार्यक्रम पर प्रस्तुति : भारतीय भाषाओं में रूसी साहित्य	रा.पु. न्यास, भारत
04.00-05.00	स्पेन : इंटरनेशनल पवेलियन; ऑस्कर पुजोल द्वारा एक वार्ता	रा.पु. न्यास, भारत
	थीम पवेलियन : हॉल सं. 5	
11.30-01.30	पर्यावरण पर पैनल चर्चा : प्रो. विवेक कुमार, नीरंजन भारद्वाज, एम.ए. हक	रा.पु. न्यास, भारत
02.30-04.30	श्री कुलप्रीत यादव, लेखक के साथ प्राइम टाइम चर्चा	रा.पु. न्यास, भारत
04.30-06.00	बहुभाषीय लेखक सम्मिलन; *संयोजन* : ज्योतिकृष्ण वर्मा; *सहभागी* : गौरीशंकर रैना (कश्मीर), मुकुल कुमार (अंग्रेजी), मोहन हिमथानी (सिंधी), चंद्रभान खयाल (उर्दू), प्रताप सिंह (हिंदी)	साहित्य अकादेमी
06.30-08.00	'आजादी का अमृत महोत्सव' पर कार्यक्रम	उत्तर प्रदेश पर्यटन
	सेमिनार हॉल : हॉल सं. 4	
11.30-01.00	संगोष्ठी : 'नागरी लिपि'	नागरी लिपि परिषद
04.00-05.30	'राष्ट्र निर्माण में लोक सेवाओं का योगदान और युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत' विषय पर चर्चा	अजयविजन एजुकेशन प्रा.लि.
06.00-07.30	पुस्तक विमोचन : 'भीम उवाच' और 'लॉस्ट एंड फाउंड'	प्रखर गूँज पब्लिकेशंस
	बाल मंडप : हॉल सं. 3	
11.00-11.45	कहानी वाचन सत्र; सुश्री उषा छाबड़ा (कहानी वाचक)	प्रथम बुक
11.50-12.30	अंतर-विद्यालयी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु.न्या.
12.45-01.15	कहानीकला कार्यशाला; सुश्री अम्बालिका भट्ट	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु.न्या.
1.30-02.15	स्टाम्प बनाने की कार्यशाला; संखा सामंथा	कॉम्पैक्ट सोसा. फॉर सोशल वेलफेयर
02.30-3.00	भारतीय संग्रहालयों की चित्रकला प्रतियोगिता; सलेक चंद	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु.न्या.
	ऑथर्स कॉर्नर : हॉल सं. 5	
11.30-12.30	पुस्तक विमोचन एवं चर्चा : 'द स्टोरी ऑफ द लिटिल बॉय'; *लेखक* : डॉ. आर.डी. मोहन	द बुक लाइन
01.30-02.30	लेखक परिचर्चा; *वक्ता* : ऋषिराज	प्रभात प्रकाशन
03.00-04.00	'हू नीड्स ए पोएम? और स्टोरीज वी बिकम' विषय पर चर्चा; *वक्ता* : उर्जा जोशी, मोहन सीजी, आशीष चक्रवर्ती, रश्मि त्रिवेदी, डॉ. हर्शल सिंह	माई सीक्रेट बुकशेल्फ
06.00-07.00	राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का कार्यक्रम	रा.पु. न्यास, भारत
	लेखक मंच : हॉल सं. 2	
11.30-12.30	प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा रचना पाठ; *वक्ता* : डॉ. बी.एल. गौड़, श्री शैलेन्द्र शैल, डॉ. राकेश पांडेय; *संचालन* : डॉ. विवेक गौतम	उद्भव सामाजिक एवं शैक्षिक संस्था
01.00-02.00	पुस्तक 'स्त्री का पुरुषार्थ' का लोकार्पण एवं परिचर्चा; *लेखिका* : डॉ. सांत्वना श्रीकांत; *वक्ता* : डॉ. इला घोष, अनीता पांडे, नरेश शांडियल, डॉ. राजवंती वशिष्ठ, लिली मित्र	सांत्वता पयासी
02.30-03.30	कार्यक्रम : उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग	रा.पु. न्यास, भारत
04.00-05.00	'नारी की यात्रा : वैदिक से आधुनिक युग तक'; *वक्ता* : डॉ. इला घोष, डॉ. रमा, डॉ. ज्योति शर्मा, सुश्री मीना प्रजापति, डॉ. सांत्वना श्रीकांत, श्री राजेश्वर वशिष्ठ; *संचालन* : सांत्वना	अश्रुतपूर्वा
05.30-06.30	पुस्तक 'तुम्हारे नाम की कविता' (काव्य संध्या); *वक्ता* : राजेंद्र निगम 'राज' इंदु 'राज' निगम, लक्ष्मी शंकर बाजपेई, ममता किरण, अनिल जोशी, रेणु हुसैन, बी.एल. गौड़; *संचालन* : राजेंद्र निगम 'राज'	राजेंद्र निगम 'राज', परंपरा संस्था
07.00-08.00	पत्रिका 'अखियों के झरोखों से'; *वक्ता* : श्रीमती चित्रा मुदगल, डॉ. चंद्रकला त्रिपाठी, श्री महेश दर्पण; *संचालन* : अनामिका 'शिव'	सुधा स्मृति ट्रस्ट
	सांस्कृतिक कार्यक्रम (एंफीथियेटर)	
06.00-07.00	गान एवं नृत्य	केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

पुस्तक मेला के बारे में सामान्य जानकारी

प्रगति मैदान : कहाँ पर क्या

मेले की अवधि	:	25 फरवरी -05 मार्च, 2023
समय	:	प्रातः 11 से सायं 8 बजे तक
स्थान	:	हॉल सं. 2 से 5

हॉल संख्या 5

थीम मंडप (आजादी का अमृत महोत्सव)
ऑथर्स कॉर्नर

हॉल संख्या 4

गेस्ट ऑफ ऑनर पवेलियन-फ्रांस
जी20 पवेलियन
बिजनेस लाउंज (व्यापार कक्ष)
इंटरनेशनल इवेंट्स कॉर्नर
सेमिनार हॉल

हॉल संख्या 4 (प्रथम तल)

नई शिक्षा नीति 2020 पवेलियन

हॉल संख्या 3

बाल मंडप

हॉल संख्या 3 (मेजानिन)

नई दिल्ली राइट्स टेबल

हॉल संख्या 2

लेखक मंच

पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं

सामान्य एवं व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी	:	हॉल सं. 5 और 4 (प्रथम तल)
हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएँ	:	हॉल सं. 2
बच्चों के लिए पुस्तकें	:	हॉल सं. 3

20 मेट्रो स्टेशन पर पुस्तक मेले के टिकट उपलब्ध

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला देखने आने वालों के लिए दिल्ली मेट्रो ने एक अच्छी सुविधा उपलब्ध कराई है, जिसके तहत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के 20 मेट्रो स्टेशनों पर

पुस्तक मेले के लिए प्रवेश के टिकट उपलब्ध होंगे। वैसे ये टिकट प्रगति मैदान पर भी लिए जा सकते हैं। प्रगति मैदान के **गेट सं. 4** और **10** पर टिकट उपलब्ध हैं। इसके अलावा वेबसाइट : www.itpoonlineticket.in से भी ऑनलाइन टिकट ले सकते हैं। **टिकट दर : वयस्क– 20 रुपये, बच्चे– 10 रुपये।** छात्रों, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों के लिए प्रवेश निशुल्क है। जिन मेट्रो स्टेशनों पर टिकट उपलब्ध होंगे, वे इस प्रकार हैं–

1. **रेड लाइन** : रिठाला, दिलशाद गार्डन।
2. **ब्लू लाइन** : कीर्ति नगर, राजेन्द्र पैलेस, मंडी हाउस, सुप्रीम कोर्ट, वैशाली, नोएडा सेक्टर 18, नोएडा सेक्टर 52, नोएडा इलेक्ट्रॉनिक सिटी, इंद्रप्रस्थ।
3. **येलो लाइन** : हुड्डा सिटी सेंटर, हौज खास, विश्वविद्यालय, जीटीबी नगर, जहाँगीरपुरी, कश्मीरी गेट, राजीव चौक, आईएनए।
4. **वॉयलेट लाइन** : आईटीओ।

प्रवेश : गेट नं 4 (भैरों मार्ग) और गेट नं 10 (मेट्रो स्टेशन के पास)।
नोट : व्हील चेयर की सुविधा गेट नं 4 और 10 पर उपलब्ध है।

QR कोड स्कैन करके नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के टिकट ऑनलाइन खरीदे जा सकते हैं :

भाषावार प्रकाशक

• 1. हिंदी : 178 • 2. उर्दू : 19 • 3. संस्कृत : 3 • 4. मलयालम : 3 • 5. पंजाबी : 7 • 6. तमिल : 2
• 7. बांग्ला : 4 • 8. अंग्रेजी : 325 • 9. असमिया : 1 • 10. सिंधी : 2 • 11. गुजराती : 1 • 12. मैथिली : 2

हमसे यहाँ भी जुड़ें

https://www.twitter.com/nbt_india | https://www.facebook.com/nationalbooktrustindia | LinkedIn https://www.linkedin.com/company/nationalbooktrustindia
YouTube https://www.youtube.com/nbtindia | https://www.instagram.com/nbtindia | https://www.kooapp.com/profile/nbtindia

अधिक जानकारी के लिए www.nbtindia.gov.in पर जाएँ

मेला वार्ता के लिए विज्ञापन, समाचार, सूचना एवं सुझाव

इस ई-मेल पर भेजे जा सकते हैं– **melavartandwbf@gmail.com**
प्रकाशन हेतु सामग्री मेला वार्ता के **हॉल संख्या** 4 के पास स्थित कार्यालय को भी दी जा सकती है।
विज्ञापन की दर इस प्रकार है : एक कॉलम, एक-चौथाई पेज–एक दिन के लिए रु. **3,000/- ;**
सभी अंकों के लिए मात्र रु. **25,000/-** विज्ञापन कम-से-कम एक दिन पहले भुगतान के साथ कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।

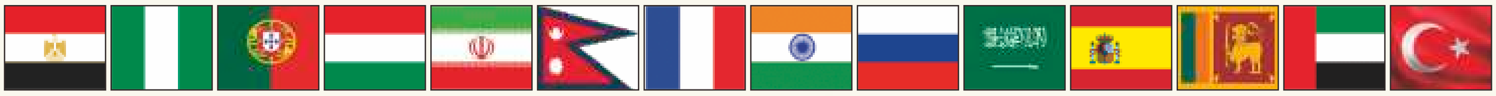

संपादक	संपादकीय सहयोग	उत्पादन	लेआउट एवं सज्जा / टंकण	संवाददाता
पंकज चतुर्वेदी	विजय कुमार कमलेश पाण्डेय डॉ. अकरम हुसैन	पवन दूबे	लेआउट एवं सज्जा: ऋतुराज शर्मा टंकण: भानुप्रिया	अर्चिता नयन कंचन कौशल

मेला वार्ता, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 30वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के लिए प्रकाशित विशेष बुलेटिन है। इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

nbt.india

श्री युवराज मलिक, *निदेशक*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित एवं मे. सालासर इमेजिंग सिस्टम्स, ए-97, सेक्टर-58, नोएडा-201301 द्वारा मुद्रित।